SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों के अकादमिक विकास एवं व्यवसायिक व्यवहार का अध्ययन

अविनीश कुमार, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
रमा त्यागी, (Ph.D.), प्राचार्य
आई.पी.एस. कॉलेज, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
अविनीश कुमार, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
रमा त्यागी, (Ph.D.), प्राचार्य
आई.पी.एस. कॉलेज, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 08/03/2021
Revised on : -----
Accepted on : 15/03/2021
Plagiarism : 04% on 08/03/2021

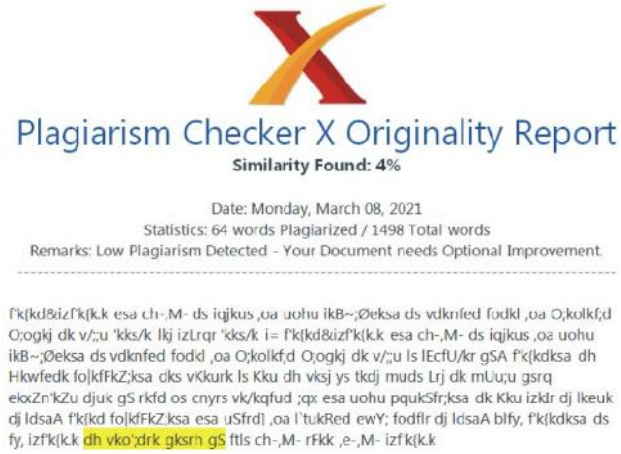
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 4%

Date: Monday, March 08, 2021
Statistics: 64 words Plagiarized / 1498 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

f'k{kd&izf'k{k.k esa ch-,M- ds iqjkus ,oa uohu ikB~;Øeksa ds vdknfed fodkl ,oa O;kolkf;d O;ogkj dk v/;;u 'kks/k lkj izLrqr 'kks/k i= f'k{kd&izf'k{k.k esa ch-,M- ds iqjkus ,oa uohu ikB~;Øeksa ds vdknfed fodkl ,oa O;kolkf;d O;ogkj dk v/;;u ls lEcfU/kr gSA f'k{kdksa dh Hkwfedk fo|kfFkZ;ksa dks vKkurk ls Kku dh vksj ys tkdj muds Lrj dk mUu;u gsrq ekxZn'kZu djuk gS rkfd os cnyrs vk/kqfud ;qx esa uohu pqukSfr;ksa dk Kku izkIr dj lkeuk dj ldsaA f'k{kd fo|kfFkZ;ksa esa uSfrd] ,oa l'tukRed ewY; fodflr dj ldsaA blfy, f'k{kdksa ds fy, izf'k{k.k dh vko';drk gksrh gS ftls ch-,M- rFkk ,e-,M- izf'k{k.k

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों के अकादमिक विकास एवं व्यवसायिक व्यवहार का अध्ययन से सम्बन्धित है। शिक्षकों की भूमिका विद्यार्थियों को अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाकर उनके स्तर का उन्नयन हेतु मार्गदर्शन करना है ताकि वे बदलते आधुनिक युग में नवीन चुनौतियों का ज्ञान प्राप्त कर सामना कर सकें। शिक्षक विद्यार्थियों में नैतिक, एवं सृजनात्मक मूल्य विकसित कर सकें, इसलिए शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जिसे बी.एड. तथा एम.एड. प्रशिक्षण पाठ्यक्रम कहते हैं। ये पाठ्यक्रम शिक्षकों के अकादमिक विकास के लिए एवं शैक्षणिक गुणवत्ता बढ़ाने के लिए किये जाते हैं।

मुख्य शब्द

शिक्षक–प्रशिक्षण, अकादमिक विकास एवं व्यवसायिक व्यवहार.

आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ प्रदर्शक होता है जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाता है। भारतीय संस्कृति में शिक्षक को दो स्वरूपों में देखा जाता है, जिन्हें आध्यात्मिक गुरु और लौकिक गुरु के रूप में परिभाषित किया गया है। चूँकि बात शिक्षक के प्रसंग से जुड़ी है इसलिए यहाँ लौकिक स्वरूप में शिक्षक के बारे में चर्चा करना प्रासंगिक है।

शिक्षक का मुख्य कार्य बालक की आन्तरिक विशेषताओं व क्षमताओं को विकसित करना है और व्याप्त बुराईयों को इस प्रकार समाप्त करना है कि वह व्यक्ति स्वयं भी न समझ सके जिसमें बुराई थी। शिक्षक

अपने लक्ष्य में तभी सफल हो सकेगा जब वह अपनी पूर्ण क्षमता व इच्छाशक्ति के साथ धैर्य को धारण किए हुए सतत प्रयासरत रहे। ऐसा तब सम्भव है जब शिक्षक में अपने कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण हो क्योंकि सकारात्मक दृष्टिकोण ही व्यक्ति को संपूर्ण ऊर्जा व क्षमता के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करता है और विपरीत स्थिति में उसे वहाँ डटकर खड़े रहने की शक्ति प्रदान करता है।

प्रशिक्षणरोपन्त शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों की आकांक्षा बहुत ही उच्च स्तर की कल्पना पर आधारित होती है। ऐसी अवस्था में उन्हें उचित मार्गदर्शन के द्वारा जीवन मूल्य का महत्व बताते हुए भविष्य हेतु योजनाओं के विषय में प्रेरणा दी जाये जिससे कि विद्यार्थी कि जीवन रूपी आधार सुदृढ़ हो सके। किसी भी शिक्षक के अकादमिक विकास के लिए पाठ्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करना, उनका आयोजन, कार्यान्वयन, परिवीक्षण तथा मूल्यांकन करना होता है।

एन.सी.टी.ई. ने नियमावली 2014 के तहत दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का प्रारूप एन.सी.एफ 2005 तथा एन. सी.एफ.टी.ई. 2009 के ध्यानाकर्षण के साथ साथ पूर्व की कमेटियों के प्रतिवेदनों को दृष्टिगत करते हुए तैयार किया एवं देश के विभिन्न बी.एड. कार्यक्रम संचालित विश्वविद्यालयों को निर्धारित प्रारूप के अनुरूप पाठ्यक्रम प्रदान करने की स्वायत्तता प्रदान की, जिसके तहत विश्वविद्यालय अपनी स्थानीय आवश्यकताओं को पाठ्यक्रम में जोड़कर पाठ्यक्रम को प्रभावशाली बनाने में अपनी भूमिका का निर्वहन करें। इससे पूर्व प्रारूप तैयार करने से पूर्व एन.सी.टी. ई. द्वारा देश भर में दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के संदर्भ में बडे शहरों एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में कार्यगोष्ठी आयोजित कर सुझाव आमन्त्रित किये गये, जिसके पश्चात् एन.सी.टी.ई. ने पाठ्यक्रम प्रारूप का स्वरूप निर्गत किया।

बी.एड. का नवीन पाठ्यक्रम के बिन्दु निम्नलिखित हैं:

- शिक्षा, संस्कृति और मानव मूल्य
- शैक्षिक मूल्यांकन और आंकलन
- शैक्षणिक मनोविज्ञान
- मार्गदर्शन और परामर्श
- समग्र शिक्षा
- शिक्षा का दर्शन

बी.एड. के नवीन व पुराने पाठ्यक्रमों की तुलना के फलस्वरूप शोधार्थी को जिज्ञासा हुई कि दो वर्षीय बी. एड. कार्यक्रम के प्रति बी.एड. कॉलेज के प्रशासकों, अध्यापक शिक्षको एवं छात्राध्यापको ने किस प्रकार अपनाया है एवं इसे कैसे क्रियान्वित किया जा रहा है।

शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों के अकादमिक विकास एवं व्यावसायिक व्यवहार का अध्ययन शोधार्थी द्वारा किया गया है।

शोध के उद्देश्य

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैं:

1. शिक्षण प्रशिक्षण के लिए बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों पर बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों के अकादमिक विकास का अध्ययन करना।
3. शिक्षकों पर बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों के व्यवसायिक व्यवहार का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

शोधार्थी ने अपने इस शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाईं हैं:

1. शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों के अकादमिक विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं

पाया जाता है।

2. शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों का शिक्षकों के व्यवसायिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध विधि में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है, क्योंकि यह एक सर्वोत्तम विधि है। यह आंकडों का संकलन, संग्रहण, सारणीयन, वर्गीकरण, मूल्याँकन, सामान्यीकरण एवं व्याख्या, तुलना एवं मापन भी करती है, इसलिए प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु चयन, समय एवं उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा स्वयं उपस्थित होकर बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों से सम्बन्धित आंकडों का संकलन किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध समस्या हेतु के लिए बी.एड के कुल 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों का चयन किया गया, जिनमें शासकीय माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के बी.एड. के पुराने पाठ्यक्रमों से शिक्षण प्राप्त किये गये 50 महिला पुरुष शिक्षक तथा अशासकीय माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बी.एड. के नवीन पाठ्यक्रम से शिक्षण प्राप्त किये गये 50 महिला पुरुष शिक्षक प्रशिक्षकों को सम्मिलित किया गया।

अध्ययन का परिसीमन

1. अध्ययन केवल ग्वालियर नगर के शिक्षक–प्रशिक्षकों पर ही किया गया है।
2. शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

प्रदत्त संकलन के उपकरण

श्रीमती गीता रानी एवं एम.के. त्यागी द्वारा निर्मित शिक्षक व्यवहार मापनी का प्रमाणीकृत उपकरण शोधार्थी द्वारा उपयोग किया गया है।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है:

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट
- सार्थकता स्तर

आंकड़ों का विश्लेषण

परिकल्पना 1

शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों के अकादमिक विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 1 : शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों के अकादमिक विकास के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
बी.एड. के पुराने पाठ्यक्रम का अकादमिक विकास	24.62	3.31	98	10.08
बी.एड. के नवीन पाठ्यक्रम का अकादमिक विकास	19.28	1.75		

Degree of freedom (df) = (50-1)+(50-1) = 98

98 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.63 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 1.99 होता है। गणना से प्राप्त t का मान 10.08 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों के अकादमिक विकास में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना 2

शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों का शिक्षकों के व्यावसायिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 2 : शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के नवीन एवं पुराने पाठ्यक्रमों का शिक्षकों के व्यावसायिक व्यवहार का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
बी.एड. के पुराने पाठ्यक्रम का व्यावसायिक व्यवहार	159.26	10.08	98	14.34
बी.एड. के नवीन पाठ्यक्रम का व्यावसायिक व्यवहार	126.66	12.52		

Degree of freedom (df) = (50-1)+(50-1) = 98

98 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.63 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 1.99 होता है। गणना से प्राप्त ज का मान 14.34 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों का शिक्षकों के व्यावसायिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष

शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों के अकादमिक विकास में प्रशिक्षणार्थी पुराने पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन के प्रति अधिक जागरूक हैं एवं उनमें पाठ्यक्रम की ज्यादा समझ विकसित है जिससे उनका अकादमिक विकास सहज रूप से हो जाता है। पुराने पाठ्यक्रम के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ शिक्षण अधिगम में उनकी दूरदर्शिता में वृद्धि होती है, जबकि नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार प्रशिक्षार्णियों को अकादमिक विकास करने में कुछ खास सहायता प्राप्त नहीं हुई है, इसीलिए शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के पुराने एवं नवीन पाठ्यक्रमों के अकादमिक विकास में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

शिक्षित नवयुवकों का निर्माण तब तक असम्भव है जब तक उन्हें ढालने वाले शिक्षक उपयुक्त रूप से शिक्षित व उन्नत न हो एवं शिक्षक अपने शिक्षण व्यवसाय में पूर्ण रूपेण प्रशिक्षित व दक्ष न हो। शिक्षकों के व्यवसायिक व्यवहार का अध्ययन किया गया तो बी.एड. के पुराने पाठ्यक्रमों में शिक्षण–प्रशिक्षणों का मध्यमान नवीन पाठ्यक्रम से अधिक आया है। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि पुराने पाठ्यक्रम से प्रशिक्षणार्थियों की व्यवसायिक व्यवहार नवीन से उत्तम है, इसीलिए शिक्षक–प्रशिक्षण में बी.एड. के नवीन एवं पुराने पाठ्यक्रमों का शिक्षकों की व्यवसायिक व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सुझाव

1. प्रशिक्षणार्थियों को बी.एड. पाठ्यक्रम का पूर्ण रूप से अध्ययन करना चाहिए।
2. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी को पाठ्यक्रम से सम्बन्धित समस्याओं को सूचीबद्ध करके मार्गदर्शक से सलाह करना चाहिए।
3. शिक्षकों को समय–समय पर प्रशिक्षण एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रमों में भाग लेकर अपने ज्ञान तथा कौशल में वृद्धि करनी चाहिए।

4. शिक्षकों को उन्मुखीकरण कार्यक्रमों के द्वारा नई तकनीक से परिचित होकर विद्यार्थियों को उसका लाभ पहुँचाना चाहिए।
5. शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट रहें एवं विद्यार्थियों को एकाग्रता से शिक्षा प्रदान करें।
6. शिक्षकों को राष्ट्रीय नैतिक एवं समाजिक मूल्यों को स्वयं आत्मसात् करते हुए विद्यार्थियों में भी इन गुणों के प्रति रुझान पैदा करना चाहिए।
7. शिक्षकों का उत्तरदायित्व है कि वह विद्यार्थियों पर विशेष रूप से व्यक्तिगत ध्यान दे एवं अध्ययन के प्रति उनमें ललक पैदा करे।

संदर्भ सूची

1. अग्निहोत्री, रविन्द्र (2008), *आधुनिक भारतीय शिक्षा : समस्याएँ और समाधान,* राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
2. अग्रवाल, जे.सी. (2012), *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा,* अग्रवाल पब्लिकेशन।
3. बेस्ट, जे. डब्ल्यू., (2004), *रिसर्च इन एजुकेशन,* न्यू देहलीः प्रेंटिस हॉल इण्डिया प्रा. लि.।
4. भार्गव, महेश. *आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन,* एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
5. भटनागर, सुरेश, (2008), *विवेचनात्मक अध्ययन कोठारी कमीशन, एजुकेशन कमीशन,* आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. भगवान, दास (2006) *''शिक्षा मनोविज्ञान''* ओमेगा पब्लिक नई दिल्ली ।
7. चौधरी, प्यारे लाल, चौपड़ा, आर.एल. (नवीनतम संस्करण) *शैक्षिक अनुसंधान,* स्वाति पब्लिकेशन।
8. दुबे, सत्यनारायण, (2014) *अध्यापक शिक्षा.* इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

****